''मृणाल पाण्डे के नाटकों में नवीन मूल्यबोध''

विश्वविद्यालय हिन्दी –विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर,दरभंगा

की पीए-च०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध विषय की रूप–रेखा

शोध निर्देशक

डा0 अभिमन्यु कुमार

सहायक प्राध्यापक

सी0एम0 कालेज, हिन्दी विभाग,

दरभंगा।

शोध प्रज्ञा

संध्या राय

पैट क्रमांक E2209087

हिन्दी विभाग

ल० ना० मि० वि०

दरभंगा

प्रस्तावना

समकालिन हिन्दी साहित्य जगत की सुप्रसिद्ध लेखिका एवं पत्रकार मृणाल पाण्डे का जन्म मध्य प्रदेश के तिकम गढ़ जिले में 26 फरवरी 1946 को एक साहित्यक परिवार में हुआ था। वे प्रसिद्ध कथाकार शिवानी की सुपुत्री है। उनके पिता श्री शुकदेव पंत उतर प्रदेश राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री थे। उनके पति का नाम अरविन्द पाण्डे है। उनकी दो बेटियाँ हैं।

मृणाल जी ने सिर्फ नारी जीवन ही नहीं सामाजिक जीवन के समस्त पहलूओं पर अपनी कलम चलाई है। उन्होंने साहित्य के लगभग सभी विद्याओं में लेखन किया है–नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि। वे मीडिया पर्सन के रूप में भी जानी जाती है। मृणाल पाण्डे ने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'वामा', 'दैनिक हिन्दुस्तान' में संपादन का कार्य किया। उन्होंने स्टार यूथ के लिए हिन्दी बुलेटिन का संपादन किया। साथ ही 'बंद गलियों के विरूद्ध ' पत्रिका का संपादन किया। वे लोकसभा चैनल पर साप्ताहिक साक्षात्कार कार्यक्रम 'बातो–बातो में ' का भी संचालन करती है।

मृणाल पाण्डे कृत पुस्तकें निम्नवत हैः–

उपन्यासः– 'विरूद्ध', 'पटरंगपुरपुरण', 'देवी', 'हमका दिया परदेस', 'अपनी गवाही'।

कहानी संग्रहः– 'दरम्यान', 'शब्दवेधी', 'एक नीच ट्रेजडी', 'एक स्त्री का विदागीत', 'चार दिन की जवानी तेरी', 'यानी की एक बात थी'।

नाटकः– 'जो राम रची राखा', 'आदमी जो मछुआरा नही था', 'काजर की कोठरी', 'चोर निकल के भागा','शर्मा जी की मुक्ति कथा', 'धीरे–धीरे रे मना', 'सुपरमैन की वापसी'।

निबंधः– 'परिधि पर स्त्री', 'स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक'।

समकालीन समय में महिला नाटककारों की श्रेणी में मृणाल पाण्डे का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि क्षेत्रो में अपनी प्रतिभा दर्ज की है, लेकिन नाटककार के रूप में उनकी पहचान खास है। मृणाक पाण्डे ने नाट्य सहित्य को संपन्न बनाने का पूरा प्रयास किया है। नाटककार के रू‍प में उनकी यात्रा आस्सी के दशक से शुरू होती है। उनके नाटक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता व्यंग्य रही है। उन्होंने अपने नाटकों मे राजनीतिक अव्यवस्था पर करारा चोर किया है। साथ ही स्त्री अस्मिता पर प्रश्न भी खड़ा किया है। आज के समय की परिस्थितियों को समझने के लिए मृणाल पाण्डे के नाटकों को स्त्रोत बनाया जा सकता है।

मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एक प्रखर लेखिका एवं पत्रकार के रूप में सामने आता है। साहित्यकार अपने समाज में व्याप्त समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करता है। लेखिका मृणाल पाण्डे अपनी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं का सूक्ष्मता से वर्णन करती है । उनकी रचनाओं पर स्त्रीवादी मानसिकता का प्रभाव,भूमंडलीकरण का प्रभाव उभर कर सामने आता है।

'पहले–पहल' उत्सव के लिए उन्होंने एक नाटक जातक कथा के आधार पर लिखा था। यह नाटक 'नटरंग' पत्रिका में ''मौजूदा हालात को देखते हुए'' शीर्षक से छपा। 14 अक्टूबर,79 को भोपाल में भोपाल के एक पुराने नाटयकर्मी भाऊ खिरवड.कर के निर्देशन में खेला गया। इसकी कोई प्रतिलिपि आज प्राप्य नहीं है। वे अपना दूसरा नाटक'' जो राज रचि राखा'' 1980 में लिखती है वो भी 'नटरंग' पत्रिका में ही प्रकाशित होती है। इस नाटक की स्त्री पात्र मन्ना सेठ की मां एक ऐसी स्त्री है जो पुरूष प्रधान समाज में अपने पति के अधीन रहना ही अपना धर्म

और कर्म समझती है। साथ ही ''आदमी जो मछुआरा नहीं था'' की स्त्री पात्र रुक्मणि के द्वारा मध्यवर्गीय परिवार की स्त्रियों की मानसिकता का वर्णन लेखिका ने किया है उनके अन्य नाटक ''काजर की काठरी'' की पात्र 'सरला' भी पुरुष प्रधान समाज की चपेट में आ गई है। पौराणिक काल से समाज में स्त्री का स्थान गौरवमय रहा है। वे पुरुष की पूरक रही है । वेद पुराण आदि ग्रंथों में ऊंचा स्थान देकर उसे हाशिए पर रखा गया है। पितृसत्तात्कमक समाज के बंधन के कारण उसे जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। वह पुरुष से नहीं बल्कि पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता से मुक्त होना चाहती है। समकालीन भारतीय समाज में नारी जीवन के संघर्षपूर्ण जीवन, उसकी विभिन्न स्थितियों का अंकन लेखिका ने अपने नाटकों में किया है।

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता

मृणाल पांडे समकालीन हिंदी साहित्य की प्रतिनिधि नाटककार हैं। उनके नाटकों के पात्र, परिवेश और कथावस्तु आज की समस्याओं से टकराते हैं। आज प्रत्येक मनुष्य बनावटी जीवन जी रहा है। वह दोहरेपन का शिकार हैं। यह दोहरापन उसकी जिंदगी में ही नहीं अपितु वैचारिक स्तर पर भी है। मृणाल पाण्डे के नाटकों के पात्र इस दोहरेपन को जीते हैं। ''जो राम रचि राखा '' नाटक का पात्र मन्ना सेठ इसी दोहरेपन का शिकार है। वह क्रांतिकारी बनकर इस व्यवस्था में बदलाव लाना चाहता है। लेकिन वह वैचारिक भटकाव का दिखाया है। उनके नाटक के पात्र जीवन के खोखलेपन को बड़ी सजीवता से उठाते हैं। स्त्री की नियति उनके नाटकों में बड़ी संजीदगी से उठाया गया है। वे अपना नाटकों के माध्यम से पितृसता की जड़ो तक जाती है। एक के बाद एक कर वे उन तहों को उधारती है, जिसके कारण पितृसत्ता की निर्माण हुआ है।

उनके नाटकों के पात्र, भाषा और कथानक स्त्री की नियति को बड़ी संजीदगी से उठाया गया है। वे अपने नाटकों के माध्यम से पितृसता की जड़ों तक जाती है। एक के बाद कर वे उन तहाँ को उधारती है, जिसके कारण पितृसत्ता की निर्माण हुआ है। उनके नाटकों के पात्र, भाषा और कथानक स्त्री की नियति को बड़ी संजीदगी से उठाते हैं। आज पूंजीवाद ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। एक तरह से कहें तो इसने हमारे संपूर्ण जीवन को प्रभावित किया है। हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। चोर निकल के भागा' और 'सुपरमैन की वापसी' नाटक बाजारवाद के चरित्र की पोल खोलता है। वैश्वीकरण के इस युग में पत्रकार, टीवी चैनल सब बिकाऊ हो गए हैं। आखिर में प्रश्न उठता है कि साधारण व्यक्ति के लिए कौन सा रास्ता है जिसपर वह चले। मृणाल पाण्डे के नाटकों में इसी तरह के गंभीर प्रश्नो को उठाया गया है। शोध के माध्यम से इन सवाली से जूझा जा सकता है। इस के बाद ही उपरोक्त समस्याओं की जड़ों तक पहुंचा जा सकता है।

प्रस्तावित शोध विषय का महत्व

मृणाल पाण्डे के नाटकों के पात्र, कथानक, परिवेश भाषा शैली और संवाद अपने समय की जटिलताओं का सामना करते हैं। शोध के दवारा उन प्रश्नों से उन समस्याओं के मूल में पंहुचना बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मृणाल दर्शकों पर कैसा प्रभाव छाड़ते है? इस बात की जांच भी मेरे शोध का अंग होगी। आज की राजनीति के खोखलेपन को, मनुष्य के अंदर आए वैचारिक भटकाव को, मीडिया की भाषा और उसके भटकाव को,स्त्री की नियति को, भूमंडलीकरण से पड़ने वाले दुष्प्रभावों को जिस सजीवता के साथ मृणाल जी ने अपने नाटकों में उठाया है, वह काफी प्रभावी है। प्रस्तावित शोध का महत्व यही है कि मृणाल जी कि नाटकों

अंदर बह रहे वैचरिक तंतुओं के ताना बाना को सामने लाने की कोशिश करना। उनके नाटकों का सामाजिक, राजनीतिक, अर्थिक, सांस्कृतिक महत्व को दिखाना ही मेरे शोध का अभीष्ट होगा।

पूर्व कृत शोध कार्यः—

1. मृणाल पाण्डे के साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण—कंचन द्विवेदी—वी0बी0एस0,पूर्वांचल वि0वि0,2020।
2. मृणाल पाण्डे के उपन्यास में नारी—बुद्धा हेमलता, आन्ध्र वि0वि0
3. मृणाल पाण्डे के साहित्य में नारी चेतना का स्वरूप —चौहान निटु सिंह, वनस्थली वि0वि0,2014।
4. मृणाल पाण्डे का कथा साहित्यःसंवेदना और शिल्प—शशि, दयालबाग शि0सं0(डिम्स वि0वि0), दयालबाग, आगरा।
5. महिला सशक्तिकरण के लिए मृणाल पाण्डे की खोज—शितल खरे, बरक्तुल्लाह वि0वि0,2022

शोध के आधार ग्रंथ :— ''सम्पूर्ण नाटक'', मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पना :—

मेरे शोध प्रबंध का विषय'' **मृणाल पाण्डे के नाटकों में नवीन मूल्यबोध** है। मै अपने शोध—प्रबंध में मृणाल पाण्डे के नाटकों की रचना प्रक्रिया के संबंध में नवीन तथ्यों को रखना चाहूंगी। मृणाल जी के नाटकों की कथावस्तु, पात्र योजना, परिवेश, भाषा—शैली और संवाद पर नये पहलुओं को अपने शोध प्रबंध में रेखांकित करने की कोशिश करूँगी। एक अच्छे नाटक की विशेषता होती है

कि वह रंगमंच पर भी सफलता पूर्वक खेला जा सके। मृणाल पाण्डे के नाटक रंगमंच पर कितने सफल है यह शोध का विषय है। उनके नाटक के पात्र दर्शकों पर कितना सघन प्रभाव छोड़ते हैं? नाटक में संवादात्मकता, सजीवता और उसकी रचना प्रक्रिया पर अपने शोध में विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करूंगी। मृणाल पाण्डे के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री अस्मिता का सवाल खड़ा दिखाई देता है। उनके नाटक भी इन सवालों से अछूते नहीं है। उनके नाटकों में भी स्त्री अस्मिता का सवाल अपने ज्वलंत रूप में मौजूद है। उन सवालों से दो–चार होना मेरे शोध विषय का अहम हिस्सा है। उनके नाटकों के पात्र भूमण्डलीकरण, आधुनिकता आदि से जूझते हैं। इन सबका प्रभाव उनके नाटकों पर कितना पड़ा है यह सब भी देखना मेरे शोध का अहम हिस्सा है। मृणाल पाण्डे के नाटकों में जो नवीनता बोध है या कहें कि आधुनिकता बोध है, उसपर ध्यान आकर्षित करना भी मेरे शोध प्रबंध का मुख्य विषय होगा।

प्रस्तावित शोध विषय की प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध प्रविधि के तहत गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। नाट्य साहित्य के अध्ययन हेतु ऐतिहासिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। वर्णनात्मक एवं विशलेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग भी अपेक्षित है।

अध्याय योजनाः–

भूमिका

1. मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
2. हिन्दी नाटक और रंगमंच।
3. मृणाल पाण्डे के नाटकों का वैशिष्ट्य।
4. मृणाल पाण्डे के नाटकों में स्त्री अस्मिता का स्वरूप ।
5. भूमण्डलीकरण और मृणाल पाण्डे के नाटक।

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. मृणाल पाण्डे, सम्पूर्ण नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड,दिल्ली–110002
2. दया प्रकाश सिन्हा, आधुनिक नाटक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–110002
3. अर्चना शूक्ला, मृणाल पाण्डे का रचना संसार, लोक भारती प्रकाशन, 2017
4. डॉ0 आनन्द महेश, जयशंकर प्रसाद रंग दृष्टि और रंग सृष्टि, रा0ना0वि0,दिल्ली,2010
5. डॉ0दशरथ ओझा, हिन्दी नाटकःउदभव और विकास, राजपाल एंड सन्स,1962
6. देवेन्द्र राज अंकुर, रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2006
7. जगदीश चर्तुवेदी,भारतीय नाटक और रंगमंच,केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,नई दिल्ली,1990
8. गोविन्द चातक,आधनिक नाटक का मसीहाःमोहन राकेश, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली–51,1998

9. नेमीचन्द्र जैन, रंग परम्परा भारतीय नाट्य में निरन्तरता और बदलाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1996

10. नेमीचन्द्र जैन, रंग दर्शन,राधाकृष्ण प्रकाशन,

11. नेमीचन्द्र जैन, भारतीय नाट्य परम्परा, म0प्र0हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल,1989

12. नेमीचन्द्र जैन, आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, मैकमिलन,दिल्ली,1978

13. जयदेव तनेजा, हिन्दी नाटक आज कल, तक्षशीला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

14. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, भरत और भारतीय नाट्य कला, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली,1970

15. जगदीश चन्द्र माथुर, परम्पराशील नाट्य, बि0 रा0 भा0 परिषद, पटना

16. गिरीश रस्तोगी, 20वीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच, ज्ञानपीठ प्रकाशन,2004

17. बच्चन सिंह, हिन्दी नाटक ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,दिल्ली,2001

18. डॉ0 विश्वनाथ शर्मा, हिन्दी रंगमंच का उदभव और विकास, राजपब्लिशिंग हाउस, 2001

19. रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिशचन्द्र और नवजागरण की समस्याएं, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2004

20. आशीष त्रिपाठी, समकालीन हिन्दी रंगमंच और रंगभाषा,शिल्पायन, दिल्ली,2007